**International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 10, October- 2017, pp. 441~444
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

# रष्मिरथी में जाति–भेद की समस्या

**सोनिया देवी**
**सहायक प्राफेसर हिन्दी–विभाग**
**गर्वनमेंट डिग्री कॉलेज**
**महानपुर ! जम्मू व कष्मीर**

भारतीय समाज में चिरकाल से ही जाति–भेद की समस्या चली आ रही है। जहॉ तक **रष्मिरथी''** का प्रष्न है इसमें कुछ ऐसी समस्याओं को उठाया गया है। जो केवल महाभारत काल में ही नहीं आज के युग में भी किसी–न–किसी रुप में विद्यमान है।समाज की सबसे बडी समस्या ही जाति – भेद की समस्या है। **रामधारी सिहं दिनकर''** ने भी जाति – भेद की समस्या की भर्त्सना की है। **दिनकर** ने **रष्मिरथी** में जाति – पाति की समस्या को ही प्रमुख रुप से उठाया है। दिनकर जी के अनुसार व्यक्ति की महत्ता का प्रमुख आधर उसके चारित्रिक गुण होने चाहिए,चाहे वह किसी भी जाति में पैदा हुआ हो । भले ही हमारे संविधान में इस बात की व्यवस्था की गई है। परन्तु आज भी समाज की स्थिति वैसी की वैसी ही बनी हुई है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए **दिनकर** जी ने रष्मिरथी के आरम्भ में ही कहा है:–

**ष्किसी वृन्त पर खिले विपन में, पर नमस्य है फूल,**

**सुधी खोजते नही गुणों का आदि, षक्ति का मूल''!**

दिनकर जी ने कहा है कि फूल चाहे वन में किसी भी पौधे की डाली पर क्यों न खिले, वह अपने गुणों तथा खुषबू के कारण आदर तथा सम्मान करने योग्य होता है। उसी तरह से बुद्धिमान लोग भी गुणी तथा षक्तिषाली लोगों का ही आदर करते हैं। गुणों को परखने वाले लोग गुण देखते हैं कि गुणवान व्यक्ति ऊॅची जाति का है या नीची – जाति का।

**जाति – पाति की प्रमुख समुस्या** के कारण ही ष्रष्मिरथी' में **कर्ण** को समाज की उपेक्षा का षिकार होना पडता है। कर्ण को अपनी जाति कही जाने वाली सूत – वषं में पलित – पोषित हुआ था। कवि ने कर्ण के माध्यम से यह बात स्पष्ट करने की कोषिष की है कि मनुष्य की महत्त उसकी जाति, वषं के आधार पर नहीं, बल्कि उसके कर्मो के आधार पर होनी चाहिए। **ष्रष्मिरथी''**के पहले ही सर्ग में जब **कृपाचार्य** कर्ण से उसकी जाति के बारे में पूछते है। तो कर्ण यही कहता है कि –

**ष्पूछो मेरी जाति, षक्ति हो तो मेरे भुजबल से,**

**रवि समान दीपित ललाट् से, और कवच – कुंडल सें ''**

इन पंक्तियों में कर्ण कहता है कि अगर मेरी जाति ही पूछनी है तो मेरी भुजाओं की ताकत तथा षक्ति से पूछो। और फिर भी अगर मेरी जाति के बारे में न पता चले तो मेरे प्रकाषित मस्तक, कवच और कुण्डल से मेरी

जाति और वषं के बारे में पूछो । कर्ण के कहने का तात्पर्थ है कि उसका तेजस्वी तथा ओजस्वी रुप ही उसकी जाति का परिचायक है।

कर्ण **ष्ष्जाति–वाद''** पर व्यग्ंय करते हुए कहता है –

**ष्ऊपर सिर पर कनक – छत्र, भीतर काले के काले,**

**षरमाते हैं नहीं जगत में, जाति पूछने वाले''।**

दिनकर जी ने कहा है जो लोग ऊॅची जाति पर अभिमान करते हैं तथा निम्न जातियों के लोगों का षोषण करते हैं। जब उन्हीं लोगों के सामने कोई निम्न जाति का गुणवान तथा षक्तिषाली युवक आता है तो उनकी छाती पर सॉप लेटने लगता है। फिर यह ऊॅची – जाति वाले लोग यांतो उस युवक का हाथ कटवा लेते हैं या फिर उस बालक, युबक की जाति के बारे में पूछने लगते है और ऐसे षक्तिषाली युवक को देखकर ही **द्रोणाचार्य** जैसे व्यक्ति को कहना पडता है–

**ष्सोच रहा हूॅ क्या उपाय मैं इसके साथ कॅरुगा,**

**इस प्रचण्डतम धूमकेतु का कैसे तेज हॅरुगा''।**

कर्ण का मानना है कि समाज में उच्चता **व्यक्ति की जाति पर** नही उसके गुणों और पौरुष के आधार पर ऑकी जानी चाहिए।

**द्वितीय** – सर्ग में ही कर्ण ने निम्न जातियों को जो बार – बार अपमानित किया जाता है उस पर आक्रोष व्यक्त करते हुए और समाज को जातियों मे बंटा होने पर दुःख व्यक्त करते हुए कहा है

**ष्मै कहता हूॅ अगर विधाता नर को मुट्ठी में भरकर, कहीं छींट दे ब्रह्मलोक से ही नीचे भू – मण्डल पर, तो भी विविध़ जातियों में ही मनुज यहॉ आ सकता है, नीचे है क्यारियॉ बनी, तो बीज कहॉ जा सकता है,''।**

एक ही जाति में किसी को ऊॅचा या नीचा कहना अनुचित है। जबकि मनुष्य का अलग – अलग जातियों में बॅटना स्वाभाविक है। जिस देष में व्यक्ति के गुणों के आधार पर नहीं, उसकी जाति और वषं के आधार पर सम्मान तथा आदर मिलता है। वह देष रसातल में समा जाएगा !

कर्ण कहता है कि जब किसी कुल में जन्म लेना मनुष्य के अपने हाथ में नही है तब क्यों उसे नीच मानकर उसका निरादर किया जाता है –

ष्मगर मनुज क्या करे ? जन्म लेना तो उसके हाथ नही, चुनना जाति और कुल अपने वष की तो बात नही''!

दिनकर जी के इलावा कबीरदास जी ने भी अपनी साखियों मे जाति – पात का विरोध किया है। वह कहते हैं कि हमे व्यक्ति की जाति के बारे मे नहीं पुछना चाहिए बल्कि उसको कितना ज्ञान है इस बातपर महत्त्व देना चाहिए । जैसे कि हमे पता है कि तलवार का महत्त्व है इसलिए हम म्यान को उतना महत्त्व नहीं देते हैं। उसी तरह से हमे व्यक्ति के गुणों को महत्ता देनी चाहिए न कि उसकी जाति – पाति देखनी चाहिए।

**ष्जाति न पूछो साधु की, पूछ लिजिए ज्ञान,**

**मेल करो तरवार का, पडा रहन दो म्यान,''।**

**रष्मिरथी** में कर्ण समाज – व्यवस्था के कर्णधारों से प्रष्न करता हुआ कहता है कि मनुष्य का जन्म नीच–जाति में हो या उच्च– जाति में यह संयोग की बात है फिर क्यों नीच जाति में जन्म लेनें वाले पर अत्याचार किये जाते हैं। जबकि ऊॅची – जाति में जन्म लेने वालों के खोटे कामों की भी प्रंषसा की जाती है। कर्ण का कहना है–

ष्कौन जन्म लेता किस कुल में, आकस्मिक की है यह बात छोटे कुल पर किन्तु, यहॉ होते है तब भी कितने आघात, हाथ जाति छोटी है तो फिर सभी हमारे गुण छोटे''।

रष्मिरथी में **जाति–पाति की समस्या** का विरोध करते हुए कर्ण ने यह भी कहा है कि पृथ्वी पर जब तक जाति – भेद कीदीवारें रहेंगी तब तक जातियों के छोटे–बड़े रुप भी रहेंगें। यदि ईष्बर मनुष्यों को मुट्ठी मे भर ब्रहतलोक से उन्हे पृथ्वी पर बिखेर दे तो भी मनुष्य विभिन्न जातियों के रुप मेंही जहॉ आऍगें क्योकि इस पृथ्वी पर जाति–भेद कीअलग–अलग क्यारियॉ बनी हुई है। उसी प्रकार इस पृथ्वी पर मनुष भी अलग–अलग जातियों मे जीवन व्यतीत करंगे।

**उपसंहारः–**

उपसंहार में हम यही कह सकते हैं कि ष्रष्मिरथी' की प्रमुख समस्या ष्जाति– भेद की समस्या' को दिनकर जी ने कर्ण के माध्यम से उजागर किया है। रष्मिरथी में कर्ण असहायों का नेता प्रतीत होता है। वह समाज के सम्मुख ऐसे व्यक्तियों की व्यथा को रखने में पूर्णता सफल हुआ है। समाज में तो ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि व्यक्ति का आदर उसके गुणों, उसके षौर्य के आधार पर होनी चाहिए न कि जाति और गौत्र को आधार मानकर व्यक्ति का आदर तथा सम्मान करना चाहिए।

**संदर्भः–**

1. रामधारी सिंह दिनकर; रष्मिरथी; पृष्ठ संख्या : 13, प्रथमसर्ग
2. रामधारी सिंह दिनकर; रष्मिरथी; पृष्ठ संख्या : 13, प्रथमसर्ग
3. दिनकर; रष्मिरथी; पृष्ठ संख्या : 15, प्रथमसर्ग

4. दिनकर; रष्मिरथी; पृष्ठ संख्या : 19, प्रथमसर्ग
5. दिनकर; रष्मिरथी; पृष्ठ संख्या : 26, द्वितीय सर्ग
6. दिनकर; रष्मिरथी; पृष्ठ संख्या : 26, द्वितीय सर्ग
7. कबीरदास; साखियॉ; पृष्ठ संख्या : 2.
8. दिनकर; रष्मिरथी; पृष्ठ संख्या : 26, द्वितीय सर्ग